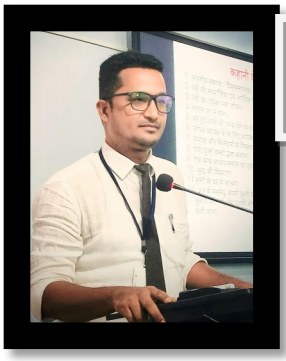

डॉ.सिराज

असिस्टेंट प्रोफेसर , कर्नाटक

तापमान

धरती जल रही है,
गर्मी हदें पार कर रही हैं।
मनुष्य खुद को बचाने के उपाय तो ढूंढ लिया है,
लेकिन प्रकृति को बचाने का विचार विलुप्त है।
कब तक AC वाले कमरे में कैद कर लेंगे?
आखिर बाहर तो निकलना ही होगा।
कैसे ओढ़ पाएंगे अंगारों भरी चादर?
पता हैं न?
50 डिग्री तापमान होने पर AC बंद हो जाएगा
52 डिग्री में चिड़िया मर जाएगी
और
55 डिग्री तापमान में इंसान का खून उबल जाएगा,
इंसान मर जाएगा।
इस कहर से जीवन को बचाना है तो
बचाना होगा हसदेव जैसे कई जंगलों को
पूंजीपतियों से।
साथ देना होगा प्रकृति की रक्षा में संघर्षरतों का
बनाने होंगे सख्त नियम और कानून
जंगल बेचने और काटने वालों के खिलाफ।
लेना होगा सही संकल्प
पर्यावरण की रक्षा का।

इंसान की खोज

मैं कवि हूं,
मानवता की तलाश में निकल पड़ा हूं.
हर जगह
हर गांव
हर शहर
हर रास्ते
हर मोड़ घूम रहा हूं.
दिख रहे हैं तो सिर्फ-
निर्जीव शरीर
इमारतों में
संसद में
धर्मस्थल में.
मैं कवि हूं
इन निर्जीवों में जीवन का संचार करूंगा
मानवतावाद के रास्ते पर फिर लाऊंगा....